

B.A. Part-3
Political Sociology

Topic: - Raajnitik Samajikaran (Paper-7)

प्र० - राजनीतिक समाजीकरण को परिभाषित करते हुए उनके प्रकारों का वर्णन करें।

उत्तर → साधारणतः बोलचाल की भाषा में राजनीतिक समाजीकरण की अवधारणा समाजीकरण पर आधारित है। यह वह प्रक्रिया है जो नागरिकों को राजनीतिक क्षेत्र में सहभागिता प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित करती है। किसी भी देश की राजनीतिक संस्कृति का पहचान और महत्व में जगतीशीलता राजनीतिक समाजीकरण के माध्यम से ही होता है। यानि यह वह प्रक्रिया है जो मुख्यतः बचपन से अंतिम समय तक सभी क्षेत्रों में ज्ञान उपलब्ध कराती है। समाजीकरण को परिभाषित करते हुए जानखान ने लिखा है कि "समाजीकरण एक प्रशिक्षण है जो प्रशिक्षार्थी को समाज में उसकी भूमिका सिखाता है।" इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण समाज में व्यक्तियों को रहना और सीखने की प्रवृत्ति को जागृत करता है।

(2)

Date

समाज में जब कभी परिवर्तन होना लगता है तो समाजीकरण के माध्यम से ही लोग राजनीति के प्रति जागरूक होते हैं तथा शासन में भगीवती बढ़ती है। राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में राजनीतिक समाजीकरण का बहुत बड़ा योगदान है।

बीजल ने कहा है " राजनीतिक समाजीकरण सीख की वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था का स्वीकृत आदर्श, चरणों एवं व्यवहारों की क्रमशः सीख मिलती है।" ग्रीन स्टोन के अनुसार " राजनीतिक समाजीकरण अभिक्रमों के माध्यम द्वारा, जिन्हें आप-कानूकी रूप से यह उत्तरदायित्व सौंपा गया है -

राजनीतिक सूचना, मूल्यों एवं व्यवहारों का विमर्शपूर्ण अंतर्निवेशन है।" लैंगडन के अनुसार " राजनीतिक समाजीकरण धार्मिक की राजनीतिक व्यवस्था में सहभागिता के लिए मूल्यों, आदर्शों और प्रेरणा का साधन है।"

इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण के माध्यम से राजनीतिक संस्कृति को जिंदा रखा जा सकता है, तथा समयानुसार परिवर्तन भी किया जा सकता है।

(3)

Date

प्रकार

राजनीति समाजीकरण के प्रकार निम्न लिखित हैं

① प्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण →

जब कोई व्यक्ति राजनीतिक मूल्यों या अपनी संस्कृति तथा विचारों को प्रत्यक्ष साधन द्वारा प्राप्त करने की कोशिश करता है, उसे प्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण कहते हैं। इस प्रकार के समाजीकरण में व्यक्ति बेहतर एवं उच्च शिक्षा के माध्यम से राजनीति में प्रवेश करना चाहता है तथा अपने उद्देश्यों, भावों अधिकारों की पूर्ति करना चाहता है। अंगर हम चीन का इतिहास देखें तो पश्चिम के विचारों के सभी शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम में लेनिन, मार्क्स और माओ के विचारों को शामिल किया गया है एवं शिक्षा में अनिवार्य किया गया है। इस प्रकार का समाजीकरण स्थायी नहीं होता क्योंकि शासन व्यवस्था बदलते ही राजनीतिक समाजीकरण बदल जाता है।

② अप्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण →

अप्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण में व्यक्ति प्रपंच या जाड़तों की राजनीति नहीं देखती है। राजनीतिक संस्कृति से इसका अर्थ

संबंध रहता है। अप्रत्यक्ष समाजीकरण की प्रक्रिया एक स्थायी और निरंतर चलती रहती है। इस प्रकार जब व्यक्ति की मनोवृत्ति, संवेदना का मुकाबला सत्ता प्राप्त करने की और अनुभव होता है, उसे ही हम अप्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण कहते हैं।

3) पुरातन राजनीतिक समाजीकरण →

इस प्रकार के समाजीकरण में राजनीति जागृति शून्य की स्थिति में रहती है। जिस व्यक्ति के पास राजनीतिक सत्ता होती है, वह उसमें कोई आधुनिकीकरण नहीं इला-चाहता क्योंकि सत्ता पुरानी परम्पराओं पर आधारित होती है। शासक वही कोई नवीन प्रणाली नहीं लाना चाहते। यह समाजीकरण स्वदिव्यकी अवस्था पर आधारित होती है। इसमें किसी भी प्रकार का परिकल्पित किदोह माना जाता है। यह केवल धूमिल एवं कुबायली समाज में पाया जाता है।

4) आधुनिक राजनीतिक समाजीकरण :-

इस राजनीतिक व्यवस्था के आधुनिक समाजीकरण कहा जाता है जिसमें व्यक्ति के पारमिष्ठ काल से ही राजनीतिक ज्ञान दी जाती है तब कि वे



द्वारा पर राजनीति सत्ता आसानी से प्राप्त कर
 सका। व्यक्ति में राजनीतिक जागरूकता लाने के लिए
 तथा नैतिकता का ज्ञान हासिल करने के लिए
 सामाजिक पत्रों, रेडियो, टेलीविजन एवं जनसम्पर्क
 के द्वारा योग्य बनाया जाता है। जैसे आधुनिक
 समाजीकरण में अल्पसंख्यक व्यक्ति राजनीतिक
 सत्ता प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार के व्यक्तियों
 का इस माहौल को तैयार है - चाहे मूक, फौरेव,
 धोखाधड़ी आदि।

इस प्रकार हम कह सकते हैं
 कि मनुष्य के राजनीतिक इसी दिग्दर्शन में
 राजनीतिक समाजीकरण का बहुत योगदान है।
 क्योंकि इसका संबंध राजनीतिक संस्कृति, राज-
 नीतिक विकास, राजनीतिक आधुनिकीकरण
 एवं राजनीतिक व्यवस्था से अन्धकार संबंध है।
 इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया
 राजनीतिक विज्ञान की एक नई संकल्पना है।

x x x x x x